2.

पंचदेव

ज ग दी श प्र सा द म ण्ड ल सा हि त्य

सं. उमेश मण्डल

पंचदेव

पंचदेव

(जगदीश प्रसाद मण्डल साहित्य)

सं. उमेश मण्डल



पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

ISBN : 978-93-87675-79-7

दाम : ₹49/-

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

PANCHDEO : 2
Compilation by Umesh Mandal of Select Maithili Stories of Shri. Jagdish Prasad Mandal.

दू शब्द

पाँच गोट कथाक सङ्कलन, तँए पोथीक नाओं ‘पंचदेव’ राखल गेल अछि। ‘पंचदेव’क एकसाए संग्रह अछि जे एकसंग प्रकाशित भऽ रहल अछि। साएओ संग्रहक कथा सभ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ सङ्कलित कएल गेल अछि। मण्डलजी मैथिली-मिथिलाक ओहन रचनाकार छैथ, जनिक रचनामे वर्त्तमान अछि, यथार्थ अछि। तँए, भाषा-साहित्यक दुनियाँमे मण्डलजीकेँ सभठाम जानल-मानल जा रहल अछि।

मैथिली साहित्यमे उत्कृष्ठ रचना तथा जीवन्त भाषाक प्रयोग हेतु मैथिली साहित्यक एकल अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार- ‘टैगोर लिटिरेचर एवार्ड’ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलेजीकेँ प्रदान कएल गेलैन। तैसंग ‘यात्री सम्मान’, ‘विदेह सम्मान’, ‘विदेह भाषा सम्मान’, ‘विदेह बाल-साहित्य पुरस्कार’, ‘वैदेह सम्मान’, तथा ‘कौशिकी साहित्य सम्मान’सँ सेहो सम्मानित छैथ। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक आइ धरिक (4 अक्टुबर 2018) कथा सभकेँ सङ्कलन करैत बेहद प्रसन्नता भऽ रहल अछि। ऐ हेतु कथाकारक आभारी छी।

संगे, आदरणीय श्री मन्त्रेश्वर झा, डॉ. शिवशंकर ‘श्रीनिवास’, श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र आ गजेन्द्र सर (श्री गजेन्द्र ठाकुर)जीक आभारी छी.! जनिक मार्ग दर्शन पाबि किछु-किछु कए रहल छी।

क्रमश: प्रो. धीरेन्द्र कुमार, डॉ. शिकुमार प्रसाद, श्री ओम प्रकाश झा, श्री कपिलेश्वर राउत, श्री राजदेव मण्डल आ श्री दुर्गानन्द मण्डलजीक सेहो आभारी छी।

ऐ साएओ पोथीक रचनाकेँ पुस्तकाकार रूप देबए-मे श्री नन्द विलास राय, श्री राम विलास साहु आ श्रीमती पुनम मण्डलक भरपूर सहयोग भेटल, ई सभकियो प्रसंशाक प्रात्र छैथ। हिनका सबहक प्रति हम आभार प्रकट कए रहल छी। तैसंग, पूरक सहयोगीमे अपन तीनू सन्तान क्रमश: पल्लवी, तुलसी आ मानबक चर्च करब सेहो आवश्यक बुझि रहल छी। तीनू बच्चाकेँ धन्यवाद-आशीर्वाद।

आइ-काल्हिक भागम-भागकेँ देखैत अपने लोकनिक सुविधा लेल छोट-छोट पोथीमे श्री मण्डलजी-रचित छोट-पैघ सभ तरहक कथाकेँ जोड़ियेलौं हेन। आशा अछि अपने लोकैनकेँ नीक लागत। सादर...।

उमेश मण्डल

निर्मली

24 नवम्वर 2018

कथाक सत्तैर-

खेतक बँटवारा

मई मासक आगमन होइते ऑफिसो आ स्कूलो-कौलेज भिनसुरका भऽ गेल। कचहरिया लोक बिशेसर काकाकेँ एस.डी.ओ. साहैब मई दिवस मनेबाक हकार देलकैन। बिशेसर काकाकेँ अपन रूटिंग छैन। भिनसुरका केहनो काज रहल तैयो चानिपर सँ नइ नहा हाथ-पएर-मुँह-कान धोइये लइ छैथ तैसंग बेसीसँ बेसी दुनू भीजल हाथे माथ पोछि सेहो लइ छैथ। तहिना जेते कालक काज रहै छैन तेते कालक अपन भार अपने कन्हापर रखि चलै छैथ।

छह बजे बिशेसर काकाकेँ अनुमण्डल परिसरमे उपस्थित हएब छैन। मुदा अपन जिनगीक ओते क्रिया-कर्म केला पछाइते ने निकलता जेकर समय बीचमे पड़ै छैन। क्रियो-कर्मक तँ अपन रूप अछि, तँए लोक किछु काजकेँ धकेल काल्हि-ले रखि लइए आ किछुकेँ नियमबद्ध वर्तमानमे करैक रूटिंगमे अपनाकेँ बन्हैत आगू बढ़ैए। तँए सबेरगरे बिशेसर काका अपन तैयारीमे लागल छला। तही बीचमे रवि भाय पहुँचलैन।

रवि भायकेँ देखते बिशेसर कक्काक मनमे ठहकलैन- काजमे काज ठाढ़ भऽ रहल अछि! मुदा दरबज्जापर आएल प्रीतकेँ बेप्रीत केने जाइयो देब तँ मनहानि हेबे करत। केतौ-ने-केतौ अपनो दोखी बनबे करब। तँए

समयकेँ देखैत अपन अँटाबेस करबे ने नीक हएत। यएह सोचि बिशेसर काका कलपर हाथो-पएर धोइ छला आ रवि भायकेँ पुछियो देलखिन-

"भोरे-भोर रवि?"

बिशेसर कक्काक बात सुनिते रवि भायकेँ बुकौर लगि गेलैन। मुदा अपनाकेँ सम्हारैत बजला-

"काका, हम गामसँ उजैर जाएब?"

रवि भाइक बात सुनि बिशेसर कक्काक मनमे ठनका जकाँ ठहकलैन। मुदा अपनाकेँ सम्हारैत बजला-

"बौआ, अखन तँ हम दोसर ठामक तैयारीमे छी तँए समैयक अभाव अछि, मुदा उजरैक कारण की अछि से कनी कहि दएह।"

ओना, गामक भनकसँ बिशेसर काकाकेँ बहुत किछु जानकारी भऽ गेल छेलैन। अनेको धारामे गाम बहि रहल अछि आ बेकता-बेकती सेहो बहिते अछि। मुदा मोटा-मोटी तीनकेँ तँ मानए पड़त। कोनो घटनाक दुनू पक्ष आ तेसर निष्पक्ष, जेकरा घटनासँ कोनो सम्बन्ध नहि रहैए, तँए समाजक बीच बेकतीगत समस्या एतेक असान अछि जे ओ मात्र दू प्रतिशत अछि, अनठानबे प्रतिशत निष्पक्षे लोक छैथ मुदा लाजिमी तँ ईहो अछिए जे निष्पक्ष केना पक्ष बनि जाइ छैथ।

बिशेसर कक्काक प्रश्न सुनि रवि भाय समाजक ओइ धारमे डुमए लगला जइमे अनेको डूमा भऽ चुकल अछि। ओना, डूमा पोखैर सेहो होइए जेकरासँ लोक डरैए मुदा ओ तँ समाजक सम्पैत छी ओकरा तँ अपने जकाँ बना ने चलब..!

अपन आँखिक बहैत यमुना धारमे रवि भाइक विचार भँसिया रहल छेलैन। मुदा जहाज पकड़ैत काकोड़क भाँज बिशेसर काकाकेँ मनमे चढ़बे ने केलैन। बिनु बुझल प्रश्नक जेहने उत्तर हेबा चाही तेहने उत्तर दैत बिशेसर काका रवि भायकेँ कहलखिन-

“बौआ, गामसँ केकरो उजरब आ केकरो उजारब दुनू दू भेल, जे असथिरसँ विचार करैक विषय छी तँए औगुतेने तँ काज नहियेँ चलतह। अबै छी तखन निचेनसँ आगूक सभ गप करब।”

रवि भाय बजला-

“काका, बोन राखए बाघ आ बाघ राखए बोन।”

मुस्की दैत बिशेसर काका बजला-

“बड़ दूरक बात बजलह रवि, मुदा बिलाइ जँ ऐ आशासँ बोन लगबै जे बाघ बनब, तखन दूध आ दूधक छालही, छालही आ छालहीक बनल मक्खन, मक्खन आ मक्खनसँ बनल ‘घी’बला लड्डू के खाएत?”

बिशेसर कक्काक बात रवि भाय कानसँ सुनलैन जरूर मुदा बेथाएल मन गड़ए नइ देलकैन। ओना, बिशेसर काकामे एते बिसवास रवि भायकेँ छैन्हे जे कोनो घटनाक वस्तु-स्थितिक विचार करैत अपन पक्ष रखै छैथ...।

कलपर सँ उतरैत बिशेसर काका लोटामे पानि नेने आगू बढ़ैत रवि भायकेँ कहलखिन-

“अखन तूँ जाह, साँझमे निचेनसँ सभ गप करब।”

ओना, रवि भाय विदा भऽ गेला मुदा जहलक डन्टाबेड़ी जकाँ दुनू पएर छनाए लगलैन। बिशेसर कक्काक मनमे सेहो प्रश्नकेँ जेना घर करक चाही से नहि केलकैन। तेकर कारण आगूमे आएल काज छेलैन।

साइकिल पकैड़ बिशेसर काका एस.डी.ओ. साहैबक हकार पूरए विदा भेला। ओना, बिशेसर काकाकेँ मोटर साइकिल सेहो छैन्हे। मुदा अपन विचार अपना जिनगीमे उतारि चलै छैथ तँए सेनरेले साइकिल सेहो रखने छैथ। स्पष्ट समझ छैन जे तीन किलो मीटरक बीच मोटर साइकिलपर नहि चढ़ब, चढ़ब एके स्थितिमे जखन साइकिल चलै जोकर परिस्थिति नहि रहत।

साइकिलपर चढ़िते बिशेसर कक्काक मन रवि भायपर पड़लैन। मुदा 'मजदूर दिवस'क हकार पूरए जाइ छी तँए रस्ताक समय ओकर ने भेल माने ओइ कार्यक्रमक। तँए जाबे तक पहुँचब तैबीच बुझै-विचारैक समय अछि। मजदूर दिवस छी, केना दिवसकेँ पकैड़ आगूक समैयक संग चलब...। आइक जे समय अछि ओ केतए अछि आ आइक जिनगी अछि से केहेन केकर अछि ई मूल प्रश्न भेल। वैचारिक दौरमे तँ सबहक मुहसँ अवाज उठिते अछि- शिक्षा, संगठन आ संघर्ष। मुदा संघर्ष बेकतीगत आकि सामुहिक माने समाजिक? मुदा तइसँ पाछूए शिक्षामे तेहेन मुसकल लागल अछि जे जेरक-जेर इंजीनियर बनि ठाढ़ होइए आ तकनीककेँ आगू बढ़ने ओ बेकार भऽ रहल अछि। तेतबे किए, वृद्धजन अपन जिनगीकेँ किए ने उजागर कऽ रहला अछि जे बेटा-पुतोहुकेँ अमेरिका गेने केहेन सुख भऽ रहल छैन? तीन बर्खक बच्चा माए-बापसँ दूर हटि दोसराक विचारधारामे बहैए–माने नव-नव शिक्षण संस्थानमे, जैठाम माता-पिताक संग एहेन रूप बनल जा रहल अछि–तैठाम 'अतिथि देवो भव:' बकबासक अतिरिक्त की बनि ठाढ़ अछि..?

नीक कार्यक्रमक आयोजन देख बिशेसर कक्काक मन सेहो पुष्ट भेलैन। पुष्ट होइते मुहसँ फुटलैन-

"केना शिकागोमे अपन जिनगीक लेल प्राण न्योछावर प्रणेताजन केलैन। आइ ओही उपलक्षमे ने सभ एकठाम भेलौं। चारि घन्टाक कार्यक्रम ऊपरा-ऊपरी रहल...।"

पानक विदाइ पबिते बिशेसर कक्काक मनमे रवि भाइक प्रश्न खसलैन। नीक कार्यक्रमसँ घुमल मन रहबे करैन, समस्यापर नीक जकाँ नजैर खिड़लैन। नजैर खिड़िते मनमे उठलैन- जेहेन समस्यामे रवि फँसल अछि, ओ कोनो मौसमी रोग नहि, बरखाउ छिऐ। एहेन-एहेन घटना गाममे पचासो भेल अछि आ होइतो रहैए। जेना भैयारीक बँटवारामे, माने दू भाँइ-तीन भाँइक बीच एकटा खेत रहल, बराबर-बराबरक बीच

आड़ि पड़ल। अपन-अपन हिस्सा कायम भेल। ओना, समय पेब खेत बदैलतो अछि। खेत बदलैक माने भेल खेतक मूल्य बदलब। मानि लिअ दू भाँइक बीच खेत अछि, एक भाँइक जमीन दिस बगलक खेतबला गाछ-बाँस लगा खेतकेँ अछाह बना देत जइसँ उपज प्रभावित हएत। जखने उपजा कम-बेसी हएत तखने ने ओकर मूल्य कम-बेसी भेल। तहिना धार-धूरक इलाकामे केतौ मोनि फोरि दइ छै आ केकरो गहींर खेतकेँ ऊँच बना घराड़ी बना दइ छै, तहूसँ खेतक मूल्यमे उछालो आ घटालो तँ अबिते अछि। मुदा एहनो तँ ऐछे जे अपन हिस्साकेँ अपन भाग्य बुझि अपन विचारपर लोक ठाढ़ रहैए। जे भैयारीक बीच कोनो बाहरी आक्रमणक मुँह नइ खुजए दइए। मुदा एहेन स्थितिमे समाज जँ चुप्पी लधने रहत सेहो नीक नहियेँ भेल।

घरपर पहुँचला पछाइतो बिशेसर कक्काक नजैर घटनाक रूपकेँ फरिछाइत नहि देख पेलकैन। ओना, बारह बजेसँ ऊपर दिन पहुँच गेल छल जइसँ कक्काक मन तबैध गेल छेलैन। तँए मन मानि लेलकैन जे तबधलमे एहेन समस्यापर विचार करब जल्दवाजी हएत। मुदा जहिना पोखैर आकि कोनो जलपात्रमे कम्पन्न उठैतकाल रसे-रसे उठैए तहिना बैसैतकाल–माने शान्त होइकाल–सेहो रसे-रसे बैसैत अछि। तँए नीक जकाँ बिशेसर कक्काक मन शान्तसँ बैसल नहि छेलैन, रसे-रसे बैस रहल छेलैन। मुदा तइ बिच्चेमे सौन मासक पंचमी मनमे उपकलैन। उपैकते मन नचलैन जे पंचमीक साँझमे मूसक माटि आ धानक लाबाक संग विषहाराक मंत्र-जप होइए। जइसँ सबहक समधानल बाट खुजै छइ। मुदा एक संग सबहक (विषधक) मंत्र-जाप भेने खुदरा-खानि–माने एक्की-दुक्की–छुटियो जाइते अछि। मुदा जे छुटि जाइए से विषैला ऐछे नहि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। अन्तो-अन्त बिशेसर कक्काक मन ओइ सिमान तक नहियेँ पहुँच सकलैन जैठाम खुदरा-खानिक कारोबार अछि।

मेघौने मने बिशेसर काका नहा कऽ खेलैन। खा कऽ ओछाइनपर

पहुँचला। एक तँ साइकिलक काटल रस्ता, झमारल देह आ तैपर अपन अराम करैक समय, तँए रवि भाइक समस्या बिशेसर कक्काक मनमे रसे-रसे पतराए लगलैन। मुदा सिरमापर माथ रखिते रवि भाइक समस्या तर-ऊपर भऽ गेलैन। तर-ऊपर होइते मन चनकलैन। ताबे तक चित्त शान्त भऽ गेल छेलैन। शान्त चीते विचार केलाह जे बेकतीगत समस्या समाजिक समस्याक अंगो छी आ बेअंगो छी। बेअंगक माने भेल एक्के समस्याक भिन्न-भिन्न बेकतीगत रूप...।

'भिन्न-भिन्न बेकतीगत रूप'पर पहुँचते बिशेसर कक्काक मन कबूल लेलकैन जे सभ समस्याक अपन-अपन मूल अछि, तँए मूल पकड़ैले ओकर जड़िमे जाएब जरूरी अछि। तैबीच नीनसँ आँखि बन्न भऽ गेलैन।

बेरुका उखड़ाहाक अन्तिम पहर, मई दिवसक अवसान। आइये ने लोक अपन जिनगीक लेल संकल्पित हएत..!

बिशेसर काका अपन दैनंदिनक रूटिंगकेँ छोड़ि अपन संकल्प दिस बढ़ला। बढ़िते रवि भाइक समस्या मनकेँ छानि लेलकैन।

मनमे छान लगिते बिशेसर काका मने-मन अपनाकेँ संकल्पित केलैन। संकल्प ई जे ने केकरो एकमुट्ठी खुऔलासँ ओकर कल्याण हेतै आ ने कोट-कचहरीक चक्कर लगौलासँ, हेतै तखन जखन समाज अपन दायित्व बुझत जे गामक जे समस्या अछि ओ समाजक पहिल समस्या भेल, तँए ओइ पाछू–माने ओकर समाधान करैक पाछू– अपनाकेँ उन्मुख करी। तैबीच सुजीता काकी लोटामे पानि आ गिलास नेने बिशेसर काका लग पहुँचली। लोटा-गिलास चौकीपर रखि चाह बनबए आँगन दिस मुड़ली कि पाछू दिससँ रस्तापर अबैत रवि भायकेँ देखली। देखते ठमैक कऽ ठाढ़ भऽ रवि भायकेँ निहारए लगली। उड़ल-उड़ल चेहराक रूप, जेना मृत्युक वाणसँ बेधाएल होथि तहिना बुझि पड़लैन।

लगमे अबिते रवि भायकेँ सुजीता काकी कहलखिन-

“बैसू, अपनो भरि दिनक तबाहीए-मे रहला, मुदा तँए की। पहिने पानि पीबू। चाह नेने अबै छी, औगतेने कोनो काज थोड़े होइ छइ।”

ओना, सुजीता काकीकेँ रवि भाइक समस्या ने बुझले छेलैन आ ने सुनले, किएक तँ बिशेसर काका समयाभावमे नहि बाजि पेने छला आ दोसर-तेसरपर सुजीता काकीकेँ ओहन बिसवासो नहियेँ छैन जे कान दऽ किछु अकाननौं रहितैथ।

मुदा पतिपर अटूट बिसवास छैन्हे तँए आश्वासनक रूपमे बजली।

ओना, बिशेसर काका सेहो दुनू गोरेक बात सुनलैन मुदा बजला किछु ने। आँगनसँ सुजीता काकी दुनू गोरे–माने बिशेसरो काका आ रवियो भाय-ले–चाह नेने एली।

पतिकेँ हाथमे चाह पकड़ा सुजीता काकी मुँह दिस देखए लगली। ओना, नजैर रवि भाइक पीड़ापर रहैन। मुदा बिशेसर काकाकेँ भेलैन जे दोसरोक हाथमे चाह देली अछि तँए चाहक नीक-अधलाक निर्णय लिअ चाहि रहली अछि। बिशेसर काका हाँइ-हाँइ कऽ दू घोंट चाह तँ पीब लेलैन मुदा बजला किछु ने।

चाह पीब पान खा बिशेसर काका रवि भायकेँ पुछलखिन-

“रवि, तखन औगताएल छेलौं तँए नीक जकाँ गप-सप्प करैक समय नइ छल। अखन सविस्तर बात कहह।”

पतिक बात सुनि सुजीता काकी सेहो चौकीपर बैसली। रवि भाइक मन उड़ल-उड़ल सन रहबे करैन तँए बिशेसर कक्काक प्रश्नक जइ क्रममे उत्तर हेबा चाही तइ क्रममे नहि दए क्रमभंग रूपमे बजला।

“काका, खेत-पथार कोनो चीज छी, मुदा मनक जे संकल्प छल ओ टुटि रहल अछि।”

ओना, रवि भाइक अपन समस्यासँ सम्बन्धिते विचार छेलैन मुदा सुजीता काकी नीक जकाँ नइ बुझि पेली, तँए डकहर जकाँ आँखियो आ

लोलो पति दिस बढ़ौने रहली।

'मनक संकल्पकेँ टुटब' सुनि बिशेसर कक्काक मन थरथराए लगलैन। वकार बन्न भऽ गेलैन किएक तँ मनमे उठि गेलैन- संकल्प तँ ओ छी जे संकल्पितकेँ भंग-भंग मृत्युक मरनोक सोझा पार करैए!

चुपा-चुपी दरबज्जापर पसैर गेल। ने कियो बजनिहार आ ने कियो सुननिहार। मुदा किछुकालक पछाइत चुप्पी तोड़ैत बिशेसर काका बजला-

"रवि, एना बात नइ बुझब। जड़िसँ सभ बात कहह।"

बिशेसर कक्काक विचारसँ रवि भाइक मन थलथलाए लगलैन। थलथलाइत मन दलदलाइत रूप पकैड़ फुटल-

"काका, दू भाँइक भैयारी अछि से तँ बुझले अछि?"

समर्थन करैत बिशेसर काका बजला-

"ऐमे के नइ कहतह।"

रवि भाय बजला-

"आठ बीघा जमीन दुनू भाँइक बीच अछि।"

बिच्चेमे बिशेसर काका बजला-

"पहिने अपन संकल्प कहह। खेत-पथार कोन चीज छी जे तइले परान गमेबह।"

बिशेसर कक्काक बात सुनिते रवि भाँइक मनमे जेना स्वाती नक्षत्रक पहिल बून खसल होनि तहिना मीठपन जगलैन। बजला-

"काका, सभ दिन अहाँ सबहक संग रहैत आएल छी, अहाँमे बेसी कलेवर अछि तँए बेसी संकल्प अछि मुदा हम ओहन नइ छी तँए कनी कम अछि।"

अपन संगीक तुलित विचार सुनि बिशेसर कक्काक मनमे उठलैन जे

रविक चित्त तँ तखन ने बुझब जखन प्रश्नक पाछू समय कम आ उत्तर पबै पाछू बेसी विचार करब। मुदा ऐठाम तँ रवि प्रश्नक जड़ि दिस बढ़िये ने रहल अछि। बजला-

“रवि, पहिने संकल्प बाजह।”

बिशेसर कक्काक बात सुनि रवि भाइक मन गवाही देलकैन जे भरिसक अपनापनमे पुछि रहला अछि...।

रवि भाय बजला-

“काका, जहिये अहाँक संगतमे एलौं तहिये मनमे रोपि लेलौं जे दोसराक पमौजी नइ करब, अपन स्वतंत्र जीवन धारण करब।”

रवि भाइक विचार सुनि बिशेसर कक्काक मन अर्पणसँ तर्पण होइत पर्पणक सिमानपर पहुँच गेलैन। जइसँ मनक मुँह मुस्कियेलैन। मुस्कियाइत बजला-

“रवि, एहेन विचार की तोरेटा मनमे जगै छह आकि सबहक मनमे जगैए। एहनो-एहनो जगता-जोर पुरुख सभ छैथ जे ने मर्त्यलोकमे माने जीबैतमे केकरो एक पाइ धाड़ै छथिन आ ने स्वर्ग गेला पछातिये केकरो मुहेँ सुनै छैथ जे बैंकक बँकियौता अहाँक ऊपरमे एते अछि। जखने मृत्युलोकमे केकरो मुहेँ अधला नइ सुनब तखने ने स्वर्गोक स्वतंत्रता भेल, नहि तँ ओहो गुलामीए भेल किने।”

ओना, रवि भाइक मन एकाग्र भऽ गेल छेलैन, तँए बिशेसर कक्काक विचार ओइ रूपे नइ लऽ अपन संकल्प दिस बढ़ए लगलैन। बढ़िते बजला-

“काका, अहाँ तँ देखते छी छोट भाए रहितो प्रकाश दिल्लीमे अपन मकान बना सपरिवार रहैए। धिया-पुताकेँ नीक स्कूलमे, माने पैसाबला स्कूलमे पढ़बैए आ अपने ऑफिसमे बाबू बनि जीबैए।”

बिच्चेमे बिशेसर काका बजला-

"सभ बात ते नहि बुझल अछि, मुदा किछु-किछु नइ बुझल अछि सेहो नहियेँ अछि, तँए दिल्लीबला बात छोड़ह।"

बिशेसर कक्काक बात सुनि रवि भाय बजला-

"काका, जहिना कोनो गाछक सिर चारू भाग चतरल रहैए तहिना ने जिनगियोक लत्ती अछि, भलेँ मनुखक सिर एक-सिरे किए ने होइ।"

रवि भाइक विचार सुनि बिशेसर काका ठमकला। चारू दिस नजैर घुमबैत बजला-

"बौआ रवि, जे आदमी गामसँ बाहर जा बसि गेल ओइ दिस समय नइ लगबए चाही छी। समय लगबए चाहै छी ओइ दिस जे गाममे रहि संगे-संगे समाज बनि जीब रहल छैथ तँए अप्पन बात बाजह।"

रवि-

"काका, जे काज दुनू भाँइसँ सम्बन्धित अछि ओ तँ बजबे ने करब।"

गौर करैत बिशेसर काका कहलखिन-

"हँ, ओ तँ अनिवार्ये अछि। मुदा जेतबे समस्यासँ सम्बन्धित अछि, तेतबे बाजह।"

रवि भाय बजला-

"काका, एक संग दूटा समस्या उठि गेल अछि!"

रविक मुहसँ 'एक संग दूटा समस्या' सुनि बिशेसर काका अकचकेला। अकचकेला ई जे जँ कोनो रोगीकेँ ओहन दूटा रोग एकसंग पकैड़ लइ, जेकर दवाइ एक दोसराक प्रतिकूल होइ, तखन तँ मरबे करत किने..! फेर मनमे उठलैन- मृत्यु तँ अनिवार्य अछिए, चाहे ओ विचारक होइ आकि कोनो किरिये-कलापक, मुदा दुनूक तँ अपन-अपन गतिधारा अछिए, ओ तँ जीबिते रहैए किने..? मनमे अबिते बिशेसर काका बजला-

“रवि, दूटा समस्या होइ कि दसटा, मुदा सभ समस्याक अपन-अपन ओझरीक सूत होइए। जेकरा सूत्रधार सेरिया कऽ पकैड़ सुतियबैत ओइ समस्याक समाधान करैए, तँए चिन्ता ओतबे करक चाही जेते भेल घावकेँ छुटैक घड़ी होइ।”

बिशेसर कक्काक विचार सुनि रवि भाइक मनमे भरोसक अंकुर जगलैन। सब्रकेँ अँकुरिते बजला-

“काका, दुनू समस्याकेँ एकेबेर कहि दइ छी। पछाइत जेना जे विचार करब से विचारि लेब।”

रवि भाइक विचार बिशेसर काकाकेँ सेहो नीक लगलैन। पत्नी दिस नजैर उठबैत बजला-

“जँ हल्लुको-फल्लुक चाह कनियोँ बीचमे पीआ दइतौं तँ मनो हलुकाएल रहैत आ... ।”

‘खग जानए खगक बोल।’ पतिक विचार सुनिते जी-हुजुरी करैत सुजीता काकी बजली-

“बेस कहलौं! बीचमे रवि सेहो अपन विचारक मुँह-मिलानी कऽ लेत।”

सुजीता काकी चाह बनबए गेली। बिशेसर काका बजला-

“रवि, जहिना लोक तहिना परिवार आ तहिना गामो-समाज तेना ओझरा गेल अछि जे रस्ता भेटब कठिन भऽ गेल छइ। मनुख तँ चलत रस्ते धेने, जे भेटबे कठिन भऽ गेल छइ। तखन मनुखो तँ मनुख छी, बुधि-विचार-विवेकक मालिक। जखन दुनियाँमे जीबै छी तखन कोनो-ने-कोनो देने अपनो विचारक रस्ता ताकिये लेब। तँए चिन्तनीय कोनो बात नहि।”

बिशेसर कक्काक बात सुनि रविक मनमे सेहो भरोसक उदय भेल। तैबीच सुजीता काकी चाह नेने पहुँचली।

बिशेसर काका मुँहमे चाहक गिलास भीरेबे केलैन कि बिच्चेमे सुजीता काकी टोनि देलखिन-

“बड़ आशासँ रवि दरबज्जापर पहुँचल अछि।”

सुजीता काकीक बात सुनि रवि भाइक मनक क्लेश अदहा-अदही कमि गेलैन, मुदा बिशेसर कक्काक मनक समस्या दोबरा गेलैन। दोबराइते पत्नीकेँ कहलखिन-

“अहाँ की आने पुरुख जकाँ हमरा बुझै छी। अनका जकाँ हम थोड़े किछु मनमे रखि किछु विचार मुहसँ बहार करै छी। हम एकबोलिया छी, ने किछु मनमे रखि बजै छी आ ने पेटमे रखै छी। जे रहैए ओ उगैल दइ छिऐ। हँ, एहेन भऽ सकैए जे किछु समाधान तत्काल भऽ जाइए आ किछुकेँ समैयक प्रतीक्षा करए पड़ै छइ। मुदा जखने ओकर मुहूर्त औत तखने ओकर मुँह जगतै जे समाधानक उचित समय भेल।”

एके विचारमे चाहो सठि गेल। मुदा एते सतर्की सुजीता काकी रखबे केली जे बिच्चेमे पानो लगा नेने छेली।

मुँहमे पान दइते रवि भाइक मन फुदफुदेलैन। फुदफुदाइते मुहसँ फुटलैन-

“काका, दुनू समस्या एक्के बेर कहि दइ छी। अपना ढंगे अहाँ अपन विचार करब।”

रवि भाइक गप सुनि बिशेसर कक्काक नजैर देशक पुबरिया इलाका–त्रिपुरा-अरुणाचल–क भोजपर पहुँच गेलैन। जैठामक भोजमे सभसँ नीक व्यंजन जे रहल ओ सभसँ पहिने परसल जाइए। मुदा ओइमे ओकर सीमा बनल अछि, पछाइत जेना-जेना असीमित व्यंजन दिस भोज बढ़ैए तेना-तेना सीमा बदलैत पर्याप्तमे पहुँच जाइए। अपना सभ देशक उत्तरमे छी, ऐठामक भोजमे जे जेतेक नीक व्यंजन रहैए ओ तेतेक पछुआइत बँटाइए...। मुदा दच्छिनभर केरलक एकटा भोजमे सेहो पड़ि

गेलौं। ओइठाम सौंसे देशक भोज्य–विन्यास शुरुहेमे परैस देलक। अपन विन्यास कनी कम, सुआदै-ले परसलक आ आन-आन, खेनिहारक हिसाबे, कमी-मनी बेसियबैत गेल। तइसँ देखै छी जे चालि-प्रकृतिमे सेहो अन्तर अछिए। ओहो एक रंग नहियेँ अछि। जहिना कोनो स्थानपर पहुँचैले (माने जैठाम जा रहल छी) जखन कोस-दू कोस आगू बढ़ै छी तखन मनमे कनी खुशी, माने जेते टपि गेलौं, आ कनी बेसी दुख-तकलीफ तँ बुझिये पड़ैए। बुझैक कारण पैछला काजक अनुभव अछि...।

विचारक समतल सीमापर पहुँचते बिशेसर काका पत्नीकेँ कहलखिन-

“अहीं रविक माथक ढील हेरू। हम चुपचाप देखैत-सुनैत रहब। जँ केतौ बजैक खगता बुझि पड़त तँ से बाजि देब।”

पतिक विचारकेँ सुजीता काकी मने-मन ताकिये-हेरि रहल छेली कि बिच्चेमे रवि भाय घरक लक्ष्मीकेँ गुण-गान करैत बजला-

“काकी जे कहि देती से मानि लेब। भलेँ ओ कनी-मनी घाउए किए ने करए।”

सुजीता काकीकेँ बीचमे देखैत बिशेसर काका मने-मन खुशी भेला जे आब समस्या हल्लुक होइक रस्ता धेलक..!

समर्थन दैत बिशेसर काका बजला-

“रविक मन जइसँ खुशी होइ सएह विचार हमरो अछि।”

रवि भाय सुजीता काकी दिस घुमैत बजला-

“काकी, गामक सम्पैत ई डकुबा सभ लऽ जा रहल अछि, से समाज होइक नाते देखल जाएत?”

रवि भाइक बात बिशेसरो काका नीक जकाँ नइ बुझि पेला मुदा

मनमे ई रहबे करैन जे असल श्रोता तँ पत्नी छैथ। जँ हुनकर बकार बन्न हेतैन तँ पाछूसँ सह देबैन...।

सुजीता काकीक मन चटपटाए लगलैन जे रविकेँ केहेन बोल कहबै जइसँ भरोस जगतै। मुदा नीक बोल तँ तखने ने मुहसँ निकलत जखन नीक जकाँ ओ बात बुझने रहब। से तँ सुजीता काकी बुझबे ने केली। तँए कोइली जकाँ नीक बोल तँ नहि निकालि सकली मुदा मन कड़ुआ जरूर गेल छेलैन।

ओना, पिपासु सुजीता काकीकेँ देख बिशेसर कक्काक आँखिमे पानि उतैर एलैन। बजला-

“एना मुँह बन्न केने हएत, जे नइ बुझै छी आकि नइ बुझलौं ओ दोहरा कऽ रविकेँ सुना देल करियौ, जइसँ विचारमे समता औत। विचारमे समता अबिते समानता औत। जे समस्याक समधानल बाटक वाण हएत।”

पतिक विचारकेँ अपन माथपर सँ रविक माथपर फेकैत सुजीता काकी बजली-

“सभ बात ते रवि बुझबे केलह। फरिछा-फरिछा कऽ जेते बजबह ओते फरिछाइत-फरिछाइत पोखैरक घाट परक पानि बनि जेबह।”

सुजीता काकीक बात सुनिते रवि भाय भवसागरमे भँसिया गेला। मनमे उठलैन- दुनियाँक झेलक झीलमे झल-झलाइत झिलहोरि खेलब अछि। भँसियाइत बजला-

“काकी, जखन बैसैक जगहक संग चाहो-पान भेटल तखन आरो की चाही।”

रवि भाइक बात सुनि बिशेसर काका अपन विचारक सीमा टुटैत देख बजला-

“रवि, अनेरे दुनियाँमे वौएने काज थोड़े चलतह, अपन जिनगी

अपना हाथमे रखि चलैक बाट पकड़ह।”

अपन विचारसँ पाछू हटैत रवि भाय बजला-

“काका, लोक तँ लोकेक बीच ने हँसि-कानि जिनगी बितबैत चलैए।”

बिशेसर काका रविक भँसियाइत मनकेँ पकड़ैले एकटा खिस्सा उठबैत बजला-

“रब्बी, एकटा रहैथ संकल्प मुनि। हुनकर मन जखन असथिर रहैन तखन सबहक सभ बात सुनैथ आ जखन बगैद जानि तखन अपने बात बजबो करैथ आ अपने बुझबो करैथ। तँए जेतेक जोरसँ बजै छला तेतेक सक्कत अपनाकेँ बुझितो छला।”

बिशेसर कक्काक खिस्सामे रवि भाय तेहेन मस्त भऽ गेला जे रसे-रसे अपनोमे मस्ती उपकए लगलैन...।

रवि भाइक मस्तपन देख बिशेसर कक्काक मन मानि गेलैन जे जहिना कोनो ओझा-गुणी भुतलग्गूकेँ झोंटा पकैड़ बकबए लगैए, माने जे-जे कहबैक रहलै से-से कहबए लगैए तहिना बुझि पड़लैन। मुदा तइले तँ भूतक संग कनी दौड़ए पड़िते छइ। पाछू मुहेँ रवि भायकेँ दौड़बैत बजला-

“रवि, दुनियाँमे किछु अछि! अछि एतबे जे जे जेते दौग कऽ चलत ओ ओते दूर जाएत। आ जेकरा ऊपर माया-जालक मोटरी जेते भारी रहतै ओ ओते इचना माछ जकाँ समुद्रक कातेमे घास-पातमे ओझरा समुद्र दिस टकटकी लगौने रहत।”

बिशेसर कक्काक वाणीमे की जादू छेलैन, असलमे से तँ अपने बुझै छला मुदा दुनू श्रोता–रवि भाय आ सुजीता काकी–अपने-अपने तालमे बेताल भऽ गेली। सुजीता काकीकेँ ओंघीक आगमन भेलैन जइसँ मन हफुआए लगलैन, मुदा रवि भाय मगन भऽ जेना गगनमे विचरण करए

लगला। थोड़ेकालक पछाइत एकाएक गनगनाइत रवि भाय बजला-

"काका, अपना संगे जे दूटा काज गुजैर रहल अछि, से पहिने कहि दइ छी।"

रवि भाइक मधुर वाण सुनि बिशेसर काका बुझि गेला जे रोटी बेलैकाल जेतेक तेल आकि घीक चपाड़ा देबै तेतेक असानीसँ रोटी बेलाएत। ओना, बिनु घी वा तेलक बनलकेँ रोटी मानल जाइए भलेँ दलि-पुरी आकि कच-पुरीसँ माने कचौरीसँ ओकर पतरपनो आ ओजनो कम किए ने हौउ...।

बजला-

"शुभ काजमे जेते बिलंब करब ओते ओ अशुभे ने भेल, तँए जेतेकाल मुँहमे ताला लगौने रहबह तेतेकाल लोक धकिऐबैत रहतह।"

बिशेसर कक्काक बात सुनि रवि भाइक मन आरो जल-जलाए कऽ थल-थलाए लगलैन। थलथलाइत रवि भाय बजला-

"काका, अपनो संग आ गामोक लोककेँ देखै छिऐ जे भैयारी तक खानदानी सम्पैतकेँ गामसँ बेच-बेच लोक दिल्ली-बम्बै-कलकत्ता-बंगलौर जा बसि रहल अछि।"

बिच्चेमे बिशेसर काका बजला-

"बेस बात कहलह! आ दोसर?"

रवि भाय बजला-

"काका, की कहब। दुनू भाँइक बीच खेतक बँटवारा भऽ गेल। एकटा बान्हकातमे जे कोला अछि ओइमे दुनू भाँइक जमीनक बीच अधा-अधीपर आड़ि पड़ि गेल!"

बिच्चमे बिशेसर काका टोनलैन-

"अधा-अधीक माने बीचो-बीच किने?"

“हँ!”

रवि भाइक ‘हँ’ सुनि बिशेसर काका बजला-

“ओइमे की भेल?”

रवि भाय-

“प्रकाशक खेतक सटले दछिनबरिया खेतबला बाँस रोपि देलकै। प्रकाश दिल्ली धेने रहल। हमरा अपना ऐछे, ओकरा खूब ढकियेलौं। हित-अपेछित सभ प्रकाशकेँ जानकारी दैत रहलै मुदा भक्क् टुटबे ने केलइ।”

बिशेसर काका-

“की भक्क्?”

रवि भाय-

“प्रकाशकेँ एतबो ने बुझैमे एलै जे परदेशमे रहनिहार लोक परदेशेमे घर बना रहल अछि, गामोमे आब पक्के घर बढ़ि रहल अछि, बड़ैब-बाड़ी आकि टाटे-फरकक जरूरत आब लोककेँ किए बुझि पड़तै। तखन लोक अनेरे किए बँसवारि लगौत...।

ओहो माने बगलक खेतबला- दिल्लीए-मे एकेठाम रहबो करै छैथ, मुदा अपनो नीक-बेजा बुझैले लोक तैयार नइ अछि। प्रकाशकेँ तँ बुझबाक चाही ने जे उपजाउ खेतमे बाँस रोपि दुइर करब छी। ई सम्पैत नष्ट करब हएत।”

बिशेसर काका बजला-

“केते माथा-पच्ची रवि करबह। अपन काज पहिने बाजह।”

अधमरू जकाँ रवि भाय बजला-

“काका, की कहब। ओही खेतकेँ, जेकरा छौर-गोबरक ढकियासँ ढकियेने छेलौं जइसँ आड़ि-पाटिमे सभसँ नीक उपजा होइए। गामेक

लोक प्रकाशकेँ उचाढ़ि चढ़ा अछाह-जमीनक कीमत दऽ कऽ लिखबैक बात पक्का कऽ लेलक!”

रवि भाइक बात सुनि बिशेसर कक्काक मन झमान भऽ खसलैन। बजला-

“रवि, एके दिने थोड़े जिनगी कटि जाइए, एक दिन जीबैक लूरि जेकरा छै, ओकरा कटैए। अखन मनो थाकि गेल अछि तँए आगूक गप आगू–दोसर दिन–करब।”

❑ साभार : क्रान्तियोग

पैंतीस साल पछुआ गेलौं

अदहा फागुन बीत गेल। परसू शिवराति छल। पनरहिया फगुआ शुरू भऽ गेल। पनरहिया फगुआ भेल, जे फगुआ, फगुआ पाबैनसँ पनरह दिन पहिनहिसँ गौल-बजौल जाइए।

बेरुका समय, शुभकान्त काका दरबज्जाक ओसारक चौकीपर ठकुआएल बैसल चिन्तामे डुमल छला। चिन्ताक कारण छेलैन जे शिवरातिये-शिवराति जँ साल जौड़ैथ तँ देखैथ जँ परसू शिवराति छल, पैछला साल बीत गेल आ ऐगला साल दू दिन अगुआ गेल।

फेर जखन फगुआकेँ अड्डा बना दोसर तारीखकेँ जोड़ैथ तँ देखैथ जे तेरह दिन अखन पैछला सालक बाँकी अछि आ ऐगलाकेँ चढ़ैमे तेरह दिन देरी अछि। मुदा फेर जखन तेसर तारीखपर नजैर दैथ, जइमे चैतसँ साल शुरू होइए आ फागुनमे विसरजन करैए, तँ लगले मनमे ईहो उठि जाइन जे अनेरे लोक थोड़े गबैए- 'जे जीबए से खेलए फॉगु..!'

मुदा शुभकान्त काकाकेँ तारीखक ओझरी तैयो ने सोझरेलैन। किएक तँ लगले मनमे उठि गेलैन जे फगुआकेँ ने तेरह दिन बाँकी अछि मुदा सकराँतिक हिसाबसँ तँ पचीस दिन बाँकी अछि। किएक तँ बारह दिन पाछू चलैए। जखने पचीस भेल, तखने मासमे पाँचे दिन ने कम भेल, महिना तँ भइये गेल...।

शुभकान्त कक्काक मन जखन महिना दिस बढ़ैन आकि दोसर तारीख मनेमे हल्ला करए लगैन जे तखन तँ बैशाखसँ नवका साल आ चैत तक पुरना साल रहल...।

शुभकान्त काकाकेँ भाँजेपर ने चढ़ैन जे ऐ ओझरीकेँ केना सोझराएब। ओझराएल मनमे आरो ओझरी तखन लगि गेलैन जखन रूसक क्रान्ति मन पड़लैन। मन पड़िते मनमे ठहकलैन जे ओ क्रान्ति अक्टुबरमे भेल, जेकरा किताव पढ़निहार नवम्वर मानै छैथ। ओहूठाम पतरेक पेंच लागल अछि। तँए क्रान्तिक समय ओइठाम कोन तारीख चलै छल पहिने से ने बुझए पड़त।

आँगन बहारैत-बहारैत कल्यानी काकी जखन अँगनासँ बहराक मुँह लग पहुँचली आ दरबज्जाक मुँहक मिलानी भेलैन तखन नजैर शुभकान्त काकापर पड़लैन। हाथमे बाढ़ैन रखनहि हिया कऽ देखली तँ बुझि पड़लैन जे घटाएल घटा जकाँ करियाएल घन पसैर रहल छैन। मुदा बजली किछु ने। चुपचाप आँगनक मुँहथैर होइत बहारैत दरबज्जाक मुँहथैर लग पहुँचली तँ अपन काजक हाजिरी पुरबैत आँखि उठा शुभकान्त काकापर देलैन। ओना, शुभकान्त कक्काक आँखिमे नोर तेना डबकल रहैन जे कखनो धारक रूप धारण कऽ सकै छल। मुदा तेकरा ई सोचि शुभकान्त काका सम्हारि रखने छला जे संग मिलि दुनू परानी चाहे जेहेन जिनगी हुअए मुदा संगे-संग अखन धरि चलबो केलौं आ चलियो तँ रहले छी। तैठाम जँ अपन बेथेक कथा पत्नीकेँ सुनेबैन सेहो केहेन हएत। ओना, मनुखताक रूपमे देखल जाए तँ ओ नीक हएत। मुदा पत्नियोकेँ तँ अपन संसार छैन किने, जे दुनूक संजोगक परिवार ओइ संसारक संगम छी। तँए वैचारिक रूपमे अनिवार्य ऐछे, भलेँ बेवहारिक रूपमे अपन-अपन दुनियाँक पाछू घुमैत रही...।

ने शुभकान्ते काका कल्याणी काकीकेँ किछु कहलखिन आ ने कल्याणीए काकी किछु बजली। ओना, अपन ठकुआएल जिनगीक बीच

शुभकान्त कक्काक मन वौआइत रहैन जे कल्याणी काकीक मन कहलकैन जे भरिसक कोनो तेहेन विचारमे बिचैड़ रहला अछि जेकर कोनो रस्ते ने सुझि रहल छैन। तँए अन्हारकेँ आरो अन्हार बनबैसँ नीक जे भने ओहो अपन इजोत तकता आ हमहूँ अपन इजोत ताकब..! ई बात तँ कल्याणी काकीक मनमे उपकलैन तँ मुदा लगले दोसर मन धोपैत कहलकैन-

“जखन दुनू गोरे संगी छी, एकबट्टू रस्ता धेने चलि रहल छी तखन नहियोँ बुझब वा जानबकेँ तँ नीक नहियेँ कहल जा सकैए।”

मुदा तैयो सोझा-सोझी कल्याणी काकी किछु नहि बाजि मने-मन विचारली जे अपने नहि किछु बाजि गोपीलालक मुहसँ बजबाएब...।

कल्याणी काकी दरबज्जेपर बाढ़ैन रखि गोपीलालक आँगन एली। गोपीलाल अँगनेमे रहए, नजैर पड़िते कल्याणी काकी बजली-

“बौआ गोपी, बुड़हा ठकुआएल दरबज्जापर बैसल छैथ, से कनी भाँज बुझहक तँ, की बात छिऐ।”

गोपीलाल पकिया चेला शुभकान्त कक्काक। आन मानेमे पकिया कि कचिया से नहि कहै छी, मुदा आन गाम-गमाइत करैमे गोपीलाल संग पुरिते छैन। ओना, दसअन्नी, बरहअन्नीसँ लऽ कऽ दुअन्नी-एकन्नी तकक सभ गप शुभकान्त काका आ गोपीलालक बीच चलिते अछि तँए गोपीलाल बजैमे निधोक अछिए।

गोपीलालक आँगनसँ अगुआ कऽ निकैल कल्याणी काकी अपन दरबज्जापर आबि बाढ़ैन पकैड़ बहारए लगली। पाछूसँ गोपियोलाल आबि बिनु प्रणाम केनहि शुभकान्त काका लग बैसल। ‘बिनु प्रणाम-पाती’क गलत अर्थ नहि, एकठाम रहलाक पछाइत आ अलग-अलग रहने भेँट भेलापर दुनूक दू परिस्थिति अछि तँए प्रणामक दू रूप अछि। ..शुभकान्त काका लग बैसते गोपीलाल बाजल-

“काका, तमाकू खाइले एलौं हेन। ओना, बेरूका चाहो पछुआएले अछि।”

कनखरल कल्याणी काकी रहबे करैथ, ‘चाह’ सुनि बजली-

“बौआ गोपी, तमाकुल पाछू खइहह, पहिने चाह पीब लएह।”

शुभकान्त काका एक-दोसरपर नजैर दौड़बैत टक-टक देख रहल छला, मुदा अखन तक किछु ने बाजल छला। बकारक हरण मरणसँ भेल छेलैन आकि मरमसँ से तँ ओ जानैथ मुदा छला चुपे। मने-मन अपनो जिनगी आ परिवारक संग समाजोक जिनगीकेँ देख रहल छला, देख रहल छला टुटैत जिनगी, देख रहल छला ‘पछुआएल जिनगी’, देख रहल छला ‘खसैत जिनगी’।

मुदा अज्ञानतो तँ मुँह चुप रखैक पैघ शस्त्र छीहे। की गामक सभ समयकेँ एके रंग आँकि रहल छी? आँकबो तँ असान नहियेँ अछि, जेहेन जइ वेपारीकेँ पूजी रहत, से तेहने ने वेपारो करैए। मुदा आन बुझौ वा नहि बुझौ, आकि बुझि कऽ अनठाबौ वा नहि अनठाबौ, मुदा अपन तँ दायित्व ऐछे जे जे जानि रहल छी ओकरा मानि बना आनोकेँ मनाएब! मुदा कहबै केकरा, एहेन लोकक कानमे ने पड़ि जाए जे समस्याकेँ उनटा कऽ भगवानक दोख लगा अपनाकेँ ओइमे नुका लइए। तँए ओहन लोकक कानमे जरूर जेबा चाही जे समस्याकेँ समस्या बुझि समाधान करए।

ओना, गोपीलालक मन चुप रहबकेँ नीक बुझैत मुदा कल्याणी काकीक मन भन-भनाए लगलैन। भन-भनाए ई लगलैन जे मालिक मन्हुआएल छैथ आ अपने ओइ बातकेँ बुझबे ने करिऐ, ईहो तँ नीक नहियेँ भेल। दुनियाँ जनैए जे झुटकोसँ घैल फुटै छइ। तँए जँ कोनो एहेन विचार मुहसँ खसि पड़ए जइसँ पतिक कष्टक हरण भऽ जाइन, तँ किए ने ओहन प्रतिकार करब। मुदा ईहो नीक केना हएत जे जखन गोपीलालकेँ विचार बुझैले बजा अनलौं तखन अपने जा बीचमे टभकए लगी।

मुदा लगले कल्याणी काकीक मनमे दोसर विचार उपैक गेलैन। उपैक ई गेलैन जे भोलो बाबा तँ असगरे धुनी रमा बैसल रहै छला मुदा फेर दरबार केना लगि जाइ छेलैन! दरबार तँ अहिना ने लगै छेलैन जे पार्वती छिपलीमे जलखै, गणेशजी हाथमे पानिक लोटा आ कार्तिक खलिया बाटी नेने पहुँचै छल आ गौंआँ-घरूआ सभ सेहो कियो भाँग, कियो चीलम, कियो गूलक डोरी आ कियो गुलाब-तख्तीक संग प्रेमकटारी नेने पहुँचै छल। जखने दस गोरे एकठाम बैसलौं कि दरबार लागल।

चुपे-चुप रहने गोपीलालक मन औनाए लगलै। औनाए ई लगलै जे जखन कल्याणी काकी कक्काक मनक बात बुझैले बजा अनली तखन मुहों बन्न राखब, नीक नहियेँ भेल। शुभकान्त कक्काक आँखिपर गोपीलाल आँखि चढ़बैत बाजल-

“काका, एहेन समयसँ कहियो भेँट नहि भेल छल।”

जेना शुभकान्तो कक्काक नजैरमे यएह विचार नचै छेलैन कि की, अपन नजैरकेँ गोपीलालक नजैरसँ मिलबैत बजला-

“गोपी, तूँ तँ कौल्हुका छौड़ा छिअ, मुदा सत्तैर बर्खक जिनगीमे हमरो पहिल बेर एहेन समस्यासँ भेँट भेल अछि।”

शुभकान्त कक्काक विचारक सह गोपीलालकेँ भेटल। सह भेटिते गोपीलाल सहैट कऽ शुभकान्त कक्काक विचार लग पहुँच बाजल-

“से की काका?”

ओना, गोपीलालकेँ लगक लोक शुभकान्त काका सेहो बुझै छला आ दूरक सेहो। मुदा जइ समस्याक जालमे शुभकान्त काका ओझराएल छला तही समस्याक जालमे गोपीलाल सेहो फँसल छल तँए लग मानए लगला।

तही बीच कल्याणी काकी चाह नेने दरबज्जापर पहुँचली। ओना, शुभकान्त काका आ गोपीलालक बीच जे टोका-टोकी भेल से कल्याणी

काकी सेहो सुननहि छली। मुदा अँगनामे, चुल्हि लग, रहने नीक जकाँ नहि बुझि पेली। ओना, मनमे तैयो बिसवास बनले रहैन जे गोपीलाल सभ गप कहबे करत।

चाहक चुस्की लइत शुभकान्त काका बजला-

"बौआ गोपी, अपन आँखिक देखल अछि जे जेकरा तूँ रेडियो-अखबारमे सुनने-पढ़ने हेबह जे हिमाचल प्रदेशमे मेघ फाटि कऽ बरिसल ओहन अपनो ऐठाम गोटे साल भऽ जाइए। ऐ साल से नइ भेल। मुदा जेहेन माइरिक चोट ऐ साल लागल, तेहेन ओहू साल नइ लगै छल जइ साल मेघ फाटि कऽ बरिसै छल।"

मुड़ी डोलबैत गोपीलाल चाहक गिलास रखि बाजल-

"काकी, पानक सभ समचा एतै नेने आउ। गपो-सप्प सुनब आ पानो लगाएब।"

खग जानए खगक भाषा। भाय, भरल केना खगलक भाषा बुझत, ओ तँ सुनबो आकि देखबो करत तँ ओकरा खढ़िया जकाँ खेहारि देत। ओना, गोपीलालक भाषा शुभकान्तो काका बुझलैन, मुदा मनमे भेलैन जे मनुखकेँ तँ मनुखता पबैले मनुखाह बनइ पड़तै...।

जँ ओ मरखाह बनि जाएत तखन ओकर भरण-पोषण भारी भइये जेतइ। तहिना कल्याणी काकीक अपनो मन सजैग गेलैन। किए तँ अझप्पे ने शुभकान्त कक्काक बात सुनने छेली तँए मनमे उपैक गेल छेलैन जे दुखीकेँ सुखीक सेवा आ दलितकेँ फलितक मेवा नइ भेटत तखन दुखताहक दल केना ठाढ़ भऽ सकैए? मुदा ऐठाम तँ पति-पत्नीक बीचक प्रश्न अछि, कोनो धरानी जँ हुनकर मनक पीड़ा नइ उतारबैन तँ ओ पीड़ाइत-पीड़ाइत पीड़ाइये जेता किने। पानक सभ समचा–माने पानक पात, चुनक कोही, खएर, सुपारी, जरदा इत्यादि पनडालीमे–नेने कल्याणी काकी एली। पानक डाली देख शुभकान्त काका बजला-

“लाउ, हम अपने हाथे पान लगाएब।”

‘अपने हाथे पान लगाएब’ सुनि बिच्चेमे गोपीलाल टभकल-

“काका, हमरो नीक जकाँ पान लगाएल होइए।”

गोपीलालक बात सुनि शुभकान्त काका मुस्किएला। शुभकान्त कक्काक मुस्की देख कल्याणियो काकी आ गोपीलालोक मनमे शंका भेलैन। शंकाक कारण ई जे सभ दिन जखन कल्याणी काकीक हाथक लगौल पान काका खाइ छला तँ नीक लगै छेलैन, मुदा आइ किए एना बजला? हमहूँ कि पान लगाएब नइ बुझै छी, केते भोजो-काज आ सतनारायण भगवानक पूजोमे पान लगैबते छी। मुदा पानपर सँ धियान हटा शुभकान्त कक्काक मुस्कीपर धियान अँटकबैत गोपीलाल बाजल-

“काका, मुस्कियेलौं किए?”

ओना, चाह पीबिते आ पानक डाली आगूमे देख शुभकान्त कक्काक मनक पीड़ा पीड़ीपन नेने ठमैक गेल छेलैन तँए पानपर कम धियान रखैत मूल समस्यापर गम्भीर भऽ गेल छला। मुदा तैयो गोपीलालक पश्नकेँ जिज्ञासुक जिज्ञासा बुझि मुँह-छोहैन करैत बजला-

“गोपी, जहिना भोजन केनिहार जँ अपने भोजनक ओरियान करैत भोजन बनबए तँ ओकर मनक इच्छाक तृप्तक बीज-रोपण तखने भऽ जाइए। किएक तँ ओ अपन मनोनुकूल विन्यास बनबैए।”

गोपीलाल शुभकान्त कक्काक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पेलक किएक तँ शुभकान्तो काका अदहा विचार अपना पेटेमे रखि नेने छला। ओना, नीक जकाँ नहियोँ बुझला पछाइत ने गोपीलालेक आ ने कल्याणीए काकीक मनमे कनियोँ खोंट भेलैन। किएक तँ दुनूक नजैर शुभकान्त कक्काक ठकुआएल मनपर छेलैन। तैबीच शुभकान्तो काका मुँहमे पान लऽ नेने रहैथ।

आ जरदा खाइते शुभकान्त कक्काक मन फुलाए लगलैन जे

जरदाक सुगन्धक संग निकैल रहल छेलैन। तैबीच गोपीलाल बाजल-

“काका, की कहने छेलिऐ जे सत्तैर बर्खक जिनगीमे पहिल बेर देखलौं..?”

गोपीलालक प्रश्न सुनि शुभकान्त काका पाछू उनैट तकला तँ बुझि पड़लैन जे समस्याक ने फड़क कमी अछि आ ने सिरक। मुदा अपने ने ओकरा बिटिया कऽ बुटियाबए पड़त। जँ से नहि करब तँ अनेरे बजला साफल की हएत?

शुभकान्त काका बजला-

“बौआ गोपी, जइ चिन्ताक चिन्त करै छेलौं से पछाइत कहबह। ओना, इशारामे कहि दइ छिअ जे तीस बर्खक किसानी जिनगी पछुआ गेल।”

एक संग अनेको प्रश्न शुभकान्त कक्काक मुहसँ खसैत देख गोपीलालक मन चौंकल। चौंकते चँकियाएल जे कल्याणी काकी बजौने किए छेली आ हम कऽ की रहल छी! मुदा जैठाम बड़क गाछ जकाँ अनेको जड़ि ऊपरे-ऊपर केतौ-सँ-केतौ सिर निकैल बनि गेल अछि तैठाम मूल-जड़िकेँ पकड़ब बाल-बोधक खेलो तँ नइ छी...।

बाजल-

“काका, अपन बातकेँ बुधिया-बुधिया सीटियबैत कहियौ।”

शुभकान्त काका बजला-

“बौआ, जे कहै छिअ तैपर सुरता रखिहह। जेते सुरता रखबह तेते सूरता औतह आ जेते सूरता औतह तेते सूर-वीरता जगतह, मुदा संगे असुरता सेहो माया जकाँ पछुऐबते औतह, तँए चाँकि राखह पड़तह।”

शुभकान्त कक्काक बात सुनि जहिना कल्याणी काकी सहमली, तहिना गोपियोलाल सहमल।

सहैमते बाजल-

“हँ, से तँ ठीके कहै छिऐ काका।”

गोपीलालक बात सुनि शुभकान्त कक्काक मन जेना पाछूक विचार करैत अपन धियान मूल प्रश्नपर एकाग्र भेल। एकाग्र होइते शुभकान्त काका बजला-

“बौआ गोपी, समाजमे दू तरहेँ विचार चलैए, एकटा इष्ट होइत आ दोसर अनिष्ट होइत। इष्टसँ सुदृष्ट पनपैए आ अनिष्टसँ दुष्ट पनपैए जइसँ दुष्टताक प्रवृत्ति जगैए।”

शुभकान्त कक्काक विचार नीक जकाँ गोपीलाल बुझि नहि पेब रहल छल। तँए मुँह बबा गेल छेलइ। जे शुभकान्त काका बुझि गेला। तइ बिच्चेमे कल्याणी काकी बजली-

“अपन मन किए बेथाएल अछि?”

कल्याणी काकीक प्रश्न सुनि शुभकान्त काका अपना दिस तकैत बजला-

“बड़ बढ़ियाँ बात बजलौं। मुदा पहिने ई बुझि लिअ जे दुनियाँमे जेते दुख वा कष्ट अछि ओइमे दूअना भगवानक देल अछि बाँकी चौदहअना मनुख मनुखकेँ दइए। अपन जे दुख वा कष्ट अछि ओ मनुखक देल अछि।”

कहि शुभकान्त काका चुप भऽ गेला।

उदास होइत शुभकान्त कक्काक चेहरा देख गोपीलाल बाजल-

“उपाय?”

बेथित मने शुभकान्त काका बजला-

“बौआ, पैंतीस बर्खक जिनगी टुटने आइ औतइ पहुँच गेलौं जेतए पैंतीस बर्ख पहिने छेलौं।”

अचम्भित होइत गोपीलाल बाजल-

"पैंतीस बर्ख..?"

शुभकान्त काका बजला-

"हँ। अस्सीक दशक किसानक लेल उठानक समय रहल। जेकरा हरित क्रान्तिक संग आंशिक स्वर्ण काल सेहो कहि सकै छिऐ। ओही उठाइनमे किछु किसान अपनाकेँ उठौलैन। ओही उठाइनिक रस्तासँ अपनाकेँ उठबैत एलौं। जइसँ बाड़ी-फुलवाड़ीक रोहैन सुधैर गेल छल। जे आइ बनौआ आफतमे नाश भऽ गेल!"

अखन तक गोपीलाल मनुख निर्मित दुख वा कष्टकेँ नीक जकाँ नइ बुझै छल, तैसंग कृषि क्रान्तिक अर्थ सेहो फरिछा कऽ नइ बुझै छल, तँए दुनू प्रश्नक बीच ओझरा गेल छल। मुदा विषयक खोर-चाल भेने बुझैक जिज्ञासा मनमे जगि गेल छेलै, तँए सामंजस करैत बाजल-

"काका, अहाँ ते तेहेन पण्डितक गिरथानि पितिआइन जकाँ बजलौं जे...।"

गोपीलालक विषयकेँ सम्हारैत शुभकान्त काका बजला-

"गोपी, तूँ ते वृन्दावनक गोपी जकाँ नचनाइयेटा बुझै छह। नाचक तानी-भरनी तँ बुझै नइ छहक तँए तोरा बुझैमे कम एलह।"

चपाड़ा दैत गोपीलाल बाजल-

"काका, हमर मनक बात अहाँ बुझि गेलिऐ आब अहाँ कनी हमरा सन मुहसँ बजियौ।"

हारल बाटमे हेराएल गोपीलालक विचार सुनि शुभकान्त कक्काक मनमे पर्पनक संग अर्पण सेहो जगलैन। बजला-

"बौआ, बीसमी सदीक आठम दशकमे किसानक संग सरकार जुड़ल। जुड़िते किसानक जिनगीमे जीवनी शक्ति भरैक कार्यक्रम

बनौलक।”

बिच्चेमे गोपीलाल बाजल-

“की जीवनी शक्ति?”

“बौआ गोपी, रामायणिक कथामे सुनने हेबह जे संजीवनी बुट्टीक पहाड़े हनुमानजी उठा लेलैन।”

सुनल कथा गोपीलालकेँ रहबे करइ, बिच्चेमे बाजल-

“हनुमानजी ठीके बज्र रंगमे रंगल महावीर छला, काका।”

गोपीलालक विचार सुनि शुभकान्त कक्काक मनमे भेलैन जे भरिसक दुनू गोरे जीवनी शक्ति बुझि गेल। विचारकेँ आगू बढ़बैत बजला-

“बौआ गोपी, तीस सालक जिनगी टुटि कऽ निच्चाँ झड़ि गेल जइसँ आइ ओतइ पहुँच गेलौं जेतए तीस साल पहिने छेलौं।”

गोपीलाल बाजल-

“से केना काका?”

गोपीलालक प्रश्न सुनि शुभकान्त काका स्मृतिमे विस्मृति भऽ गेला। मन पड़लैन पूसा कृषि अनुसन्धानक आमक गाछ। बजला-

“बौआ, तीस बर्खक भीतर की अनलौं आ केतए-सँ अनलौं तेकर छोड़ह।”

ओझरीक डरे आकि की, गोपीलालोक मन जेना अकछाए लगलै तहिना बाजल-

“हँ काका, ओकरा सभकेँ अखन छोड़िये दियौ। ने अहाँ केतौ भागल जाइ छी आ ने हमहीं। दोसर दिन बुझि लेब।”

तीस साल पूर्व आनल पाँचटा आमक गाछक संग पूसाक कृषि-मेलाक उछाही शुभकान्त कक्काक मनमे आबिये गेल रहैन, बजला-

“बौआ गोपी, पाँचटा आमक गाछ आइसँ चौंतीस बर्ख पूर्व पूसासँ अनने रही। जहिना जानकारी भेटल छल तहिना रोपलौं। ओना, ओ गाछ साले भरिक पछाइत मोजैर गेल, मुदा पाँच बर्ख धरि मोजर तोड़ैत रहलिऐ। छठम सालसँ ओ पाँचो गाछ एतेक फड़ए लगल जे भरि मौसम नीक जकाँ परिवारमे चलए लगल। मुदा ओ पाँचो गाछ ऐ बेर पानिक जमावसँ सुखि गेल।”

गोपीलालक मन गुलाबखासक सिनुरियाएल आमपर पहुँच गेल। बाजल-

“सुअदगर होइ छल किने?”

शुभकान्तो काका गोपीलालक सुआदमे भँसिया गेला। भँसियाइत बजला-

“ओह! कपूर जकाँ मुँहमे बिला जाइ छल।”

गोपीलाल विचारकेँ मोड़ैत बाजल-

“जाए दियौ! जहिया जे भोग-पारसमे छल से भेल।”

शुभकान्त काका बजला-

“दसम बर्खसँ ओ आमदनीक जड़ि बनि गेल। जे साले-साल बढ़ैत-बढ़ैत किसानी जिनगीक जीवनी शक्ति बनि गेल छल।”

गोपीलाल-

“काका, दुनियाँमे केकरो आशा नइ करी ओ तँ आमक गाछे छल, लोको की ओइसँ कम अछि।”

गोपीलालक बात सुनि शुभकान्त काका किछु ने बजला। मनमे उठलैन- अस्सी बर्खक आन्हर बुढ़ जखन भदवरिया अन्हार टपि जाइए तखन...।

❑ साभार : पैंतीस साल पछुआ गेलौं

माघक चाह

जहिना समाजो आ परिवारोक पहिया एक्के गतिये नइ चलैए तहिना बलदेव कक्काक परिवारोक छैन। मुदा आन परिवारसँ भिन्नता बलदेव कक्काक परिवारमे ई छैन जे सात गोरेक परिवारमे सबहक अपन-अपन क्रिया-प्रक्रिया चाहे जे हौउ मुदा बलदेव कक्काक प्रति जे क्रिया-प्रक्रिया सबहक छैन ओ अलग छैन्हे।

अलग ई भेल जे परिवारक जेते गोरे छैथ, माने बलदेव काकासँ जुड़ल जिनकर जे सम्बन्धित जिनगी छैन, ओ कक्काक अनुकूल छैन। हलाँकि बलदेव काका अपन जिनगीक चौदह-पनरहअना काज-भार अपने हाथमे रखने छैथ तइसँ परिवारक दोसर सदस्यक बीचक काजो तेतबे कम अछि जे ओइ काजकेँ परिवारजन प्रमुख काज नहियेँ बुझैत, मुदा जएह बुझैत तइमे ओते सतरकी तँ रखबे करैत जे बलदेव काका हूसल काज देख बिगड़ैथ नहि। आ जँ परिवारजन एते मेहरमानी परिवारक अभिभावककेँ परिवारमे करैन तँ परिवारमे क्रोधक जगह केतए रहत।

अपन नियमानुकूल जिनगी बलदेव काका ओहिना नइ बनौने छैथ, जिनगीकेँ पकैड़ जमीनमे रोपिते जे गाछ जनमलैन ओइमे शिशुपन-सँ-शीशपन धरिक सेवा ओइ रूपे केलैन जे समयानुकूल छेलैन, जइसँ

समय कहियो आगूमे रोड़ा नइ अँटकौलकैन। रोड़ा तँ ओतए बेसी अँटकैए जेतए जेते बेसी प्रतिकूल गति-विधि रहल। मुदा ऐठाम एकटा भ्रम उठि सकैए, समयानुकूल सभ परिवार वा सभ समाजक गति विधि जहिना सभ रंग अछि माने लालो अछि, उजरो अछि, हरियरो आ कारियो अछि तहिना मनुखोक जिनगीमे तँ अछिए। ओही बीचमे ने लोक अपन हाथ-पैरक हिसाबसँ अपन जगह खतिया लइए जे हमरा बुते केते कएल हेतइ, आ परिवार वा समाजकेँ केते खगता छइ।

मध-मासक समय, सात बजे भिनसुरका समय। मध-मास भेल दू मौसमक बीचक जे चढ़ा-उतरीक समय होइए। दिन-रातिक रूपमे मस्तियो अबए लगैत आ मादकता सेहो बढ़बे करैत अछि। अपन नियमानुकूल जिनगी बना चललासँ एते तँ बलदेव काकाकेँ प्राप्त भइये गेल छैन, जे ने परिवारकेँ भार बुझै छैथ आ ने परिवार भार बुझैत छैन।

अपन जिनगीकेँ समयानुरूप केना चलौल जाए, माने बेवहारिक धरातलपर ठाढ़ होइत बढ़ैत भविस दिस केना बढ़ौल जाए ओ तँ निर्भर अछि विचारक कबजियाएल धारमे।

खाएर जे.., सात बजे भिनसुरका समय बलदेव कक्काक छैन जे ओ अपन भोजनोपासनाक उपायमे लगि जाइ छैथ तँए ओ समय किसानीक छिऐन। चाह पीब पान खा हँसुआ-खुरपी नेने बलदेव काका कतिका–माने मध-मासक–खेतीक आँड़िपर पहुँचला। पहुँचते हियासि कऽ देखलैन तँ खुरपीक काज आगूमे धब-दे खसलैन, अपन उपकैत जिनगीमे बलदेव काका हेलए लगला। तखने चारि सालक पोताकेँ नेने पुतोहु खेतमे पहुँच गेली।

हिचुकैत-कनैत बुधबाकेँ देख काका मन पाड़ए लगला जे एकरा कनैमे हमरो दोख तँ ने केतौ अछि। भेल ई जखन बलदेव काका चाह पीबै छैथ तखन पोतोकेँ, आइ दू सालसँ एक-घोंट, आध-घोंट चटबैत

आबि रहल छैथ। आइ बुधबा चारि सालक भऽ गेल, मुदा आदतो तँ आदत छी, जेहेन आदत पकैड़ लेत ओ जिनगी भरि नेंगरियबैत रहत। भलेँ अहूँ जँ अपन जिद्दपना पकैड़ ली तँ आदत बदलबो करै छइ।

जखन बलदेव काका चाह पीबै छला तखन बुधबा केम्हरो खेलैले चलि गेल छल, जे चाहक समैये बिसैर गेल। कक्को ऐ दुआरे गिलासमे चाह नइ रखलैन जे एक तँ ओहिना गिलासक तरी चाह भेल, माने गिलासक निचला, तैपर जँ दुइयो मिनट रहि जाएत तँ ओ चाह नहि, या तँ पानि भऽ जाएत वा चाहक झड़ भऽ जाएत।

तेतबे किए, जेते लग-पासक चुट्टी-माछी रहत ओहो सभ अपन जीवनदान करैले सेहो आबिए जाएत। तँए गिलासमे चाह राखबकेँ उचित नहि बुझि बलदेव काका चाह पीब गिलास धो रखि देलखिन। आ हँसुआ-खुरपी नेने खेत पहुँचला। तैबीच बुधना खेला कऽ आएल तँ ने बाबाकेँ देखलक आ ने गिलासमे चाह, ओही चाह-ले कानए लगल...।

बुधबाकेँ कनैत देख बुधबाक माए–बलदेव कक्काक पुतोहु, जे भानस करै छेली–मने-मन बलदेव काकाकेँ दोखी बुझि बुधबाकेँ नेने खेत पहुँच गेली। ओना, चालि-ढालिसँ सरोवरी बीस पीपड़ी छैथे, मुदा जहिना सभ परिवारमे सभ रंगक लोक रहैए तहिना बलदेवो कक्काक परिवारमे छैन्हे।

बलदेव काका लग कनैत बेटाकेँ रखि सरोवरी आँगन आबि भात चढ़ल बरतनकेँ दाबिसँ दू बेर चला दू चोट कानमे लगा कानक ऊपरमे रखि, आँच घुसका चुल्हि लग बैसली। बैसते मनमे उपकलैन बेटाक कानब।

..सरोवरी एक तरफा निर्णय कऽ लेली जे सोलह-सँ-बत्तीसअना दोखी बाबू छैथ। जँ एहेन आदत नइ लगौने रहितथिन तँ अखन बुधबा कनैत किए..!

कनैत बुधबाकेँ देख बलदेव काका खुरपी रखि हाथमे लगल ओस आ ओसाएल माटिकेँ दुनू हाथे मीड़ साफ केलैन। चिकनाएल दुनू हाथे बुधबाकेँ पकैड़ बलदेव काका वौंसैत बजला-

“ओइ राति, ओइ दिनक राति की भेल से बुझल छौ?”

एक तँ बलदेव कक्काक बात बुधबाकेँ गीत जकाँ कानमे नीक लगल, तैपर एकटा प्रश्नो छल। चाहक सुरतापर सँ बुधबाक मन बहैट गेल, जइसँ सोल्हैनी कानब तँ नइ बन्न भेल मुदा कनी कम तँ जरूर भेबे कएल।

कम होइत पोताक कानब देख बलदेव काका दोहरा कऽ बजला-

“बड़ीटा बड़ीटा राति ओइ दिन रहइ।”

ओना, बलदेव काका पोताकेँ पोल्हबैक भूमिकामे रहैथ तँए झूठ-सतक सीमा सरपट रहैन। मन गवाही दैन जे कनैत बच्चाकेँ चुप करै तक पोल्हबैक स्थिति भेल, तँए अखन चुप करब अछि। तोरिया गाए-महींस केँ दुहैकाल जहिना मलकार हरियर-हरियर घास खुआ दुहऽ चाहैए, तहिना बलदेवो काका परियास करए लगला।

ओना, बेसीकाल पोता लगमे रहै छैन, तँए बच्चाक तरी-घटी सेहो सभटा बुझबे करै छैथ।

चुप होइत बुधबा बाजल-

“ओइ दिनक बड़का रातिमे की भेल?”

गमछाक खूटमे-सँ पानो आ पानक समानो–माने कथ, सुपारी, जर्दा–निकालि बलदेव काका पान लगबैक ओरियान करैत बजला-

“पहिने पान खा ले तखन कहबौ। गप की केतौ पड़ा जाएत।”

बुधबो मानि गेल जे एक नम्बर काज भेल पान खाएब, पछाइत दोसर हएत।

ओना, मने-मन बलदेव काका ईहो अँटकार लगबैत रहैथ जे कनैत-खिजैत बच्चाकेँ जाबे किछु लहटगर वौस आगू नइ औत ताबे कानबसँ समगम नइ हएत। तँए, ओहन वौसक खोज सेहो करए लगला आ पान लगाएबकेँ सेहो ढिलियबए लगला जे कनी समय आरो खपि जाएत।

बलदेव काका पहिने बुधबाकेँ पान देलखिन पछाइत अपने खेलैन। पान खा पानक समचाकेँ गमछाक खूटमे बान्हि आँड़िपर रखिते रहैथ कि बुधबा पुछि देलकैन-

"ओइ राति, ओइ दिनक राति की भेल?"

प्रश्नकेँ भरियबैत बलदेव काका बजला-

"कइ राति, कइ दिनक राति?"

बाबाक बात सुनि बुधबा भकचका गेल। भकचकाइक कारण भेलै जे दिनक ठेकान बुझले ने रहइ।

निच्चाँ-ऊपर बुधबाकेँ देख बलदेव काका नाकपर हाथ लैत बजला-

"हँ, हँ, मन पड़ल..!"

'हँ-हँ मन पड़ल' बाबाक मुहसँ खसिते बुधबा बाजल-

"हँ, हँ, ओहए..!"

बुधबाकेँ खुशी देख बलदेव काका मने-मन विचारए लगला जे जे प्रश्न अछि ओकर उत्तर बुधबा बुझत केना, अखन ओकर बुधिक ओकाइते की छइ। चारि बर्खक बच्चाक बुधि पानि-माटिक बीचक जे रूप अछि, सएह अछि। जल-जल, पल-पल, चल-चल, थल-थल। मुदा गुण तँ दुनू विद्यमान अछिए। माने जिवनी-शक्ति जहिना माटिकेँ छै तहिना पानियोँकेँ छै, तखन तँ भेल जे सक्कतपन नइ आएल अछि।

सक्कतपन लग अबिते बलदेव कक्काक मन अपन घटित घटनापर पहुँच गेलैन। घटित् घटना ई जे गरमी मास रहौ कि जाड़क, कक्काक अपन रूटिंग छैन जे हिसाबसँ चलै छैथ, जहिना घर-बाहरक काज तहिना मन-बुधिक। माघक ओ राति जे सालक सभसँ नमहर राति छल। सभसँ नमहर ओ भेल जे क्षण-पलक हिसाबसँ एकेटा होइए। शीतलहरी मास दिन पहिनेसँ लाधल। झीसी-बरखा जकाँ पानि बनि पाला टप-टप खसैत। गाछपर सँ खसैत बून अवाजो करैत। राति नमहर भेने दिनो आ दिनक सीमो आगू दिस घुसकिये गेल छल, जइसँ काजक घड़ी बढ़ि गेल छेलैन। दू बजेसँ छह बजे भोरक समय भेल। घन्टा भरिपर चाहो-पान आ पाइनो पीबते छैथ जइसँ देहक शक्तिक संग मनक शक्ति सेहो क्रियाशील रहिते छैन। दू बजे चाह पीब, बाँकी चाह थर्मशमे रखि, जे गरमी मासमे अपन रूप अधिक काल तक बरकरार रखिते अछि। मुदा तीन बजे भोरक थर्मशक चाहक रूप जे जेठ मासक रहैए ओ ठंढसँ जकड़ल माघमे थोड़े रहत। तीन बजे भोरक चाह, मन गवाही देलकैन जे ऐ चाहकेँ तरखने चाहक रूपमे पीब सकै छी, जखन एकरो चाह पुराएब। माने भेल जहिना ठंढपनक आक्रमण अछि तहिना ओकरा गर्मपनक सहारा देल जाए तँ ओ जरूर अपन रूप धेने रहत। ..एका-एक बलदेव काकाकेँ किछु मनमे जहिना आएल होनि तहिना छड़पैत बजला-

"की कहै छेलियौ?"

अखन तक बुधबा समगम भऽ चुकल छल। मुस्की दैत बाजल-

"अहूँ बाबा बड़ बिसराह छी।"

खुशीक मोड़पर बुधबाकेँ अबैत देख बाबा बजला-

"जखने मुँहक अदहा दाँत टुटि गेल तखने कि कोनो बात-विचार मनमे अँटकैए, लगले बिसैर जाइ छी।"

बाबाकेँ पाछू हटैत देख बुधबा बाजल-

“खुरपी दिअ, हमहूँ कमाएब।”

अपन हाथक काज बाधित होइत देख बलदेव काका बुधबाकेँ कोरामे लऽ खेतक चारू आड़ि घुमौलैन। चारू आड़ि घुमौला पछाइत हँसुआ उठा आड़िपर जे नमरल घास छल तेकरा काटए लगला। आगूमे ठाढ़ बुधबा खुरपी बिसैर गेल हाथक हँसुआ छीन आड़ि काटए लगल। माने हँसुआ रगड़ए लगल।

अनुकूल समय पेब बदलेव काका अपन खुरपीक काजमे जुटि गेला। मन पड़लैन माघक चाह।

❑ साभार : बीरांगना

घबाह ट्यूशन

घिड़नीक तिनकमिया बंशीक घबाएल माछ जकाँ बुधियार काका बीस बर्खक नोकरीक पछाइत घबाएल मने अपना दिस तकलैन। घबाएल मन अइले जे प्रतियोगिता परीक्षामे बैसै-जोकर बेटा भऽ गेलैन। उचित तँ यएह ने बनैत जे वयस देख-देख अपन विषयक बात बेटोसँ पुछि लेब। एकर मतलब ई नहि जे छौड़ाकेँ बापक पैरक जूतो आ देहक अँगो अँटि जाइ छइ। जइ दिन नोकरी शुरू केलौं, तीन मन धान महिना गौंआँ मिलि दइ छला। राजा-रजबारक गाम नहि, जे स्कूल-अस्पताल खुजत। परिवारो तहिना छल, गौंआँक मुँह देख कोनो-धरानी गुजर करै छेलौं आ गामेक बच्चाकेँ पढ़ेबो करै छेलौं। अपनो बुझि पड़ै छल आ समाजो शिक्षक बुझै छला।

अपने ऊपर दुरिमतिया चढ़ल आकि समाजक ऊपर चढ़लै आकि सरकारक ऊपर चढ़लै से बुझबे ने करै छी। जे विद्यालय या तँ बेकती-विशेषक वा समाजिक स्तरपर चलै छल ओकरा आगू केना बढ़ौल जाए ई मूल प्रश्न छल। मुदा भेल की..?

खाली संस्कृते विद्यालयकेँ कहबै आकि मेडिकल, इंजीनियरिंग आदि जेनरल विद्यालयकेँ, सभटा एक्के सिरहाने पेटकुनियाँ लधने अछि।

प्रकाशकेँ सोर पाड़ि बुधियार काका कहलखिन-

“बौआ, आब तोरा-ले दुनियाँक बहुत बाट खुजैक समय आबि गेलह मुदा समय एहेन बनि गेल अछि जे जेते सहयोगक जरूरत तोरा पड़तह ओते नै दऽ सकबह। अपनो जुआन भेल जाइ छह, अपनो तँ किछु सोचिते हेबह?”

पिताक विचार सुनि प्रकाश बाजल-

“बाबूजी, ट्यूशनक नव क्षेत्र तँ बनिते जा रहल अछि, बुझल जेतइ।”

प्रकाशक विचार सुनि, कनी-काल गुम रहि बुधियार काका बजला-

“बौआ, तीनटा विद्यार्थीकेँ ट्यूशन पढ़ा अपनो शिक्षक बनलौं, मुदा आब लड़कीक शिक्षा बढ़लासँ ओहो घबाह भेल जा रहल छइ।”

❑ साभार : बजन्ता-बुझन्ता

चोर-सिपाही

चोरिक बाढ़ि एने गामे-गाम चोरक सोहरी लगि गेल। जहिना घोरन लुधकैत तहिना चोरो लुधकए लगल। सेहो एकरंगा नहि, सतरंगा! पाँखिसँ बिनु पाँखिबला घोरने जकाँ घुरछा-घुरछे! जेकर बहुमत तेकर राज-पाट! शासक-सँ-सिपाही धरि...।

अगहन मास। गामक अदहासँ ऊपर उपजल धानक खेतमे 144 लगि गेल। कोनो बटेदारीक चलैत तँ कोनो फटेदारीक। सरकारियो काज तँ सरकारीए छी। एक घन्टाक काज मासो दिनमे हएत तेकर कोनो गारंटी नहि। तखन 144 मे जप्त भेल खेत 44 दिनक बदला 44 मासो रहि सकैए। खाएर.., ओस पला गेल। दिन खिआ कऽ पानि भऽ गेल। दिन-राति शीतलहरीमे डुमि गेल। दर्जनो भरि सिपाही धानक ओगरबाहि करैत अपना जिनगी दिस तकलक तँ बुझि पड़लै जे जान बँचब कठिन अछि। पहिल सिपाही बाजल-

"खस्सी मासु खाइ-जोकर समय अछि।"

दोसर सिपाही बाजल-

"जँ बनबैले तैयार होइ तँ खस्सी आनि देब।"

सएह भेल। दूटा सिपाही विदा भेल। जेना हाथमे हथियारो आ

देहमे वर्दियो रहबे करइ तहिना दिनके देखल खस्सियो आ घरो छेलैहे। अपने जकाँ एक गोरे मुँह दबलक आ दोसर उठा कऽ लऽ अनलक।

बना-सोना कऽ सभ भरि मन खेलक। मुदा दोसरे दिनसँ दुनू सिपाहीकेँ आन-आन सिपाही 'चोरबा' कहए लगल।

सालो नइ लगलै, ग्लानिसँ ओ दुनू सिपाही गड़ि दुनू नोकरी छोड़ि अपन पुरना वृतिमे लगि गेल। एक समाज 'चोर-सिपाही' तँ दोसर समाज 'सिपाही-चोर' कहए लगलै।

❑ साभार : बजन्ता-बुझन्ता

कथाक्रम : पंचदेव (1-100)

एक तम्मा सिदहा
एक घोंट पानि
करतब
पहाड़क बेथा
उदय-प्रलय

खेतक बँटवारा
पैंतीस साल पछुआ गेलौं
माघक चाह
घबाह ट्यूशन
चोर-सिपाही

उरीन
गुणहीन
बड़की माता
पोखला कटहर
राकशे रहि गेलौं

मुफतिया माल
हेराएल जिनगी
करिछौंह मुँह
कियो ने पुछैए
अँगनेमे हेरा गेलौं

वर्थ डे
सजल स्मृति
सेहन्ता
धोखा
एक मुठी घास

डुमैत जिनगी
हूसि गेल
ठेलाबला
जीविका
धर्मनाथ

किरदानी
भरमे-सरम
धोखा केतए भेल
मीनी भ्रष्टाचार
सोमनाकाका

पटियाबला
रिक्साबला
पसेनाक धरम
दूधबला
केना जीब?

सझिया खेती	चुनवाली
सतभैंया पोखैर	रेहना चाची
दनियाँ डाबा	बुधनी दादी : 2
अर्जुन रोग	पुरनी नानी
दोसराइत	एकबोलिया दादी
उकड़ू समय	लछनमान
अवाक	बिटगरहा
कलंक : 1	गलफूलू
बताहे बताह बनौलक	लाही
भैयारी हक	पल भरि
केकरा-ले केलौं	छातीक हार
केकरो कियो ने	कोढ़िया सरधुआ
टुटली मरैया	पहपैट
बगबाइर	भोरक सपना
अपन मन अपन धन	खोंटकर्मा
एक धाप जमीन	गपक पियाहुल लोक
भैयारी	धरमूदासक अखड़ाहा
साझी	हमरा नीक नहि लगैए
सूदि भरना	कर्ज : 1
सीमा-सरहद	आब नइ आगि लगैए?

घूर

एगच्छा आमक गाछ

प्रीगर शत्रु

दहेजुआ गाए

गठूलाक गारि

गण्डा

अब-तब

झूठे

उजगी

जेना हाथी रही

कनी हमरो सुनू

नोकरिहारा

अनका बेर ओंघी

लगबे ने कएल

ओ दिन

पान पराग

फोंक मकड़

झकास

ठोररंगू

हकार

ओझरी

दोती बिआह

कचहरिया रोग

नटकिया गति

भारीपन भार बनि गेल

दिन घटि गेल

पछताबा

परिवारक प्रतिष्ठा

पागलखाना

खाए चाहैए

गामे उपैट गेल

खतियाएल घर

किछु ने फुरैए

तिलकोरक तरुआ

पटोर

बेटाक चलैत

उग्रघारा

बेटीक कुभेला

दोहरी हाक

खिलतोड़

बापक चलैत

गाम बिसैर गेल

ठकहरबा

समैयक बेरबादी

न्याय चाही

रिजल्ट

बाल बोध

अपन गारि अपन दुआरि

सरही सौबजा

अउतरित प्रश्न

पनियाहा दूध

कन्हा भँट्टा

फलहार

गावीस मोइस

निनिया देवीक आराधना

कनियाँ-पुतरा

मानसरोवर यात्रा

गामक शकल-सूरत

मितक प्रयोजन

चैन-बेचैन

पाइक इज्जत

माघक घूर : 1

मधुमाछी

मति-गति

नैहराक धाड़

माघक घूर : 2

चहकल विचार

राक्षसक झड़

सद्विचार

पोखरिक सैरात

मनकमना

कटौज

किछु ने

हथियाएल खुरपी

झुटका विदाइ

खुदियाएल

गलती अपने भेल

बत्तु

असिरवाद उलैट गेल

उड़हैड़

जिगेसा

लेहाज

जानक मोल

समर्पण

स्तब्ध

भोरक झगड़ा

शालीनता

पान

पवनक विवेक

हरवाहि

समरथाइक भूत

समता

सुखाएल सूरत

खजाना

मौसी

कर्ज : 2

टुटल मनक जुटान

ऐँठ साड़ी

अस्तित्वक समाप्ति

जाति नहि पानि

विदाइ

कर्तव्यपरायन सुगा

निशाँ

दान-दैछना

माइक वचन

मथाहाथ

पाइक मोल

गंजन

नमहर फेरा

अपन काज

बेटपन

उमेद

एकोटा ने

कथनी नै करनी

मुसाइ पण्डित

घरवास

भूल

बत्तीसोअना

पुरनी भौजी

अर्द्धांगिनी

खटहा आम
बुधि-बधिया
एकता
उमेरक लेहाज
केते लग केते दूर : 1

जितिया पाबैन
धर्मक असल रूप
शिनीची सिनेह
नवान
असुध मन

महिरम
हाथक जिनगी
सिखबैक उपय
दनगर घास
ढकरपेँच

मुसरी आ घोड़ा
जाड़ फाटि गेल
मुँहक बात मुहेँमे
कनीटा बात
गोहिक शिकार

जारैनक दुख मेटा गेल
इज्जत उतैर गेल
चापाकलक पाइप
घसवाहि
चटवाह

दुरकाल
गामक कटान
मेटाइत जिनगी
कपटी मित
अजाति

परदेशी बेटी
घरदेखिया
ऊँच-नीच
ऑपरेशन
फेर पुछबैन

समधीन
कनमन
नमहर घरक चोइर
पटोटन
पुरुषार्थ

पेटगनाह

गंगा नहेलौं

बकठाँइ

गुलेती दास

खर्च

डॉक्टर हेमन्त

मनुखक मूल्य

तीन जुगिया भाय

आश्रम नहि सोभाव बदली

मायराम

शुभचिन्तक

विधवा बिआह

वैष्णवी भगवती

प्रेमी

शंका

मुइलो बिसेबैन

प्रतिभा

केतौ नै

हमर कोन दोख

असगरे

डीहक बटबारा

मूलधन

छूआ

लफ साग

नहरकन्हा

अपन सन मुँह

पाप आ पुण्य

चोरक चोरबती

मातृभूमि

कटा-कटी

हरदीक हरदा

बेरपर

झगड़ाउ-झोटैला

फॉगु

बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक

उलबा चाउर

पतझाड़

धरम काँट

तिलासंक्रान्तिक लाइ

कठफल

क्रान्तियोग
पाही पट्टी
गोहाइर
मरियाएल मन
मदैत नै चाही

अनेरुआ बेटा
कछमछी
समदाही
वारंट
एकाग्रचित

बोनिहारिन मरनी
आशापर पानि पड़ल
बुढ़िया दादी
बाबी
बुधनी दादी : 1

गलगर भैंस
प्रवल इच्छा
अधखरूआ
मोहरा
भँसियाएल बाल-बोध

क्रियाशील
समझौता
रत्न गमेवाक दुख
भाइक सिनेह
हारि

दूटा पाइ
अपने केलहा
समुद्री विद्या
बीरांगना : 1
अनुशासन

जाम
विदाइ-दैछना
टाइपिस्ट
गजपट खेती
सुआद

बिहरन
हारि-जीत : 1
अपसोच
अपन पुरखाक डीह
खलओदार

खसैत गाछ

केते लग केते दूर : 2

कुघाटक मृत्यु

ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल

मुड़ियाएल घर

उचितवक्ता

हारि-जीत : 2

हँसीएमे उड़ि गेलौं

मनोरथ

धरती-अकास

विचार हेरा गेल

घर तोड़ि देलिऐ

आजुक जिनगीक आइ परीछा

दोहरी मारि

धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!

डकरा हाल

सीरक गाछ

परतीहा खढ़

गरदैन कट्टा बेटा

कर्जखौक

सुरता

सगहा

पकिया चेला

अनगढ़ चेतना

धोतीक मान

चुप्पा पाल

जन्मतिथि

दियरबा-भैंसुर

फज्झैत

भुतलग्गू आकि भविसलग्गू

सिरमा

मनुखदेवा

अप्पन-बीरान

सुभिमानी जिनगी

मरूभूमि

मइटुग्गर

आने जकाँ

उमकी

मुँहक खतियान

ओसार

सरोजनी

सुभद्रा

देखल दिन : 1

पड़ाइन

चास-बास दुनू गेल

बेटी हम अपराधी छी

भोलानाथ बाबा

घटक बाबा

इजोरिया राति

भँसैत नाह

शम्भुदास

शिवजीक डाक-बाक्

सजाए

छुटि गेल

कनफुसकी

फाँसी

गति-मुक्ति

बजन्ता-बुझन्ता

अप्पन हारि

कोसलिया

मुसहैन

बिसाँढ़

मत्हानि

तेरहो करम

बात-कथा सुनौलक

बेटीक पैरुख

गैत-वीध

बेवहारिक

ठका गेलौं

साए कच्छे

करिछौन लाली

बलजोर

गति-गुद्दा

कलम हानि कऽ

अकाल

भैंटक लावा

डंका

काल्हि दिन

इमानदार घूसखोर

सनेस : 1

बेर परहक भदवा

केलवाड़ी

हँसैत लहास

बलधकेल कटौज

कान फुटल कप

सड़क-कातक खेत

सनेस

छोटका काका

कुकुरपन

हमर बाइनिक विचार

आइ एम शॉरी

देखल दिन : 2

मेकचो

कामिनी

संगी

ठकुआएल भुसवा

बपौती सम्पैत

दादी-माँ

कचहरिया भाय

एक दिन

५-५ टा कथाक १०० संग्रहक ई पंचदेव शृंखला मैथिलीमे पॉकेट-बुक्सक कमीकेँ पूर्ण करत। जतेक पन्ना, ततेक दाम, मोटामोटी दस-दस पन्नाक कथा। से पढ़ैयोमे सुभितगर आ कीनैयोमे सस्ता। एक उखड़ाहामे एकटा पॉकेट बुक्स खतम भऽ सकए, से साएगो पोथी साए उखड़ाहाक खोराकी भेल। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ बीछल ऐ सभ रचनाक विषय-वस्तु अहाँक सामाजिक ज्ञानकेँ मोनो पाड़त आ बढ़ेबो करत आ अहाँकेँ सामाजिक प्राणी हेबाक बोधो कराएत। अहाँकेँ अधिकारक संग कर्तव्यक स्मरण कराएत, सरोकारी बनाएत। आ ई सभ मनोरंजनक संग भेटत। मैथिलीक ई पहिल पॉकेट-बुक्स सीरीज स्वागत योग्य अछि। **-गजेन्द्र ठाकुर**

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचना संसार : 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर-नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन, 26. पंगु, 27.आमक गाछी- उपन्यास। 28. कल्याणी, 29. सतमाए, 30. समझौता, 31. तामक तमघैल, 32. बीरांगना- एकांकी। 33. तरेगन, 34. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 35. शंभुदास, 36. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 37. गामक जिनगी, 38. अर्द्धांगिनी, 39. सतभैंया पोखैर, 40. गामक शकल-सूरत, 41. अपन मन अपन धन, 42. समरथाइक भूत, 43. अप्पन-बीरान, 44. बाल गोपाल, 45. भकमोड़, 46. उलबा चाउर, 47. पतझाड़, 48. लजबिजी, 49. उकड़ू समय, 50. मधुमाछी, 51. पसेनाक धरम, 52. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 53. फलहार, 54. खसैत गाछ, 55. एगच्छा आमक गाछ, 56. शुभचिन्तक, 57. गाछपर सँ खसला, 58. डभियाएल गाम, 59. गुलेती दास, 60. मुड़ियाएल घर, 61. बीरांगना, 62. स्मृति शेष, 63. बेटीक पैरुख, 64. क्रान्तियोग, 65. त्रिकालदर्शी, 66. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 67. दोहरी हाक, 68. सुभिमानी जिनगी, 69. देखल दिन, 70. गपक पियाहुल लोक, 71. दिवालीक दीप, 72. अप्पन गाम- लघु कथा संग्रह।





पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452